आईजीएनसीए का तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित

असम और मणिपुर के 20 कलाकारों ने जीवंत संस्कृति का किया मंचन

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय शाखा, नॉर्थ ईस्ट, क्षेत्रीय शाखा, रांची के सहयोग से 28 से 30 मार्च तक तीन दिनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमे उत्तर पूर्व भारत की समृद्ध परंपरा को प्रदर्शित किया गया। असम और मणिपुर के बीस कलाकार जीवंत उत्तर पूर्व की संस्कृति का प्रदर्शन किया। डा. ऋचा नेगी, क्षेत्रीय निद. शक, उत्तर पूर्व क्षेत्रीय केंद्र और डा. अजय कुमार मिश्रा, क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय केंद्र रांची ने आउटरीच कार्यक्रम के तीसरे दिन 30 मार्च को इस अवसर पर उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राकेश पाण्डेय, कार्यक्रम अधिकारी, आईजीएनसीए, आरस. ीआर ने की। इस अवसर पर असम की सत्त्रिया परंपरा 'माटी अखोरा' का मंचन किया गया।15 वीं सदी में वैष्णव भक्ति आंदोलन के हिस्से के रूप में सत्रीय परंपरा बढ़ी, जो संत और सुधारवादी श्रीमंत शंकरदेव ने असम में वैष्णववाद की शुरुआत की। यह वर्षों से नृत्य

के रूप में विकसित हुआ- नाटक भगवान कृष्ण की किंवदंतियों और पौराणिक कथाओं के चारों ओर घूमता है, यह विशेष रूप से भागवत पुराण जैसे पाठ पर ध्यान केंद्रित करता है। सत्त्रिय नृत्य की एक विशिष्ट विशेषता पूर्वी क्षेत्र में भागवत पुराण के सामने की जाती है, जो कि नामघर के पूजा स्थल या मंदिर के मणिकुट से मिलती है। कई अन्य शास्त्रीय नृत्य रूपों की तरह, सत्त्रिया खुद का एक संरचनात्मक व्याकरण है जिसे माटी- अखोरा कहा जाता है, जो सत्त्रिया नृत्य की नींव है। माटी- अखोरा बुनियादी व्यायाम करने की कला हैं जो विभिन्न नृत्य संख्याओं के साथ संयुक्त विभिन्न नृत्य संख्याओं के लिए एक आयाम हैं। माटी- अखोरा का अर्थ है जमीन पर किया गया व्यायाम, और इसके पूरा होने के बाद एक नर्तक को व्यक्तिगत नृत्य संख्या सिखाई जा सकती है। माटी- अखोरा एक स्वस्थ शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक समुच्चय की नींव है जो नर्तक बनने के लिए आवश्यक है। ये अभ्यास योगिक मुद्राओं के समान हैं जो नर्तकियों को शारीरिक और मानसिक अनुशासन बनाए रखने में मदद करता हैं।

सिटी एंकर

आर्यभट्ट सभागार में आईजीएनसीए के नॉर्थ-ईस्ट आउटरीच प्रोग्राम का अंतिम दिन

असम-मणिपुर से आए युवा कलाकारों ने दिखाई माटी-अखोरा, भोरताल और साली डांस की झलक

सिटी रिपोर्टर | रांची

आर्यभट्ट सभागार शनिवार को भी उत्तर पूर्व के पारंपरिक नृत्य और संगीत से गुलजार रहा। असम व मणिपुर से आए कलाकारों ने खूबसूरत प्रस्तुति ने दर्शकों को भी खूब रिझाया। यहां इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय शाखा नॉर्थ ईस्ट, क्षेत्रीय शाखा रांची द्वारा आयोजित आउटरीच प्रोग्राम के आखरी दिन का। शुरुआत भोरताल नृत्य से हुई, जो ऊर्जा से भरपूर थी। क्षेत्रीय निदेशक उत्तर पूर्व क्षेत्रीय केंद्र डॉ. ऋचा नेगी, क्षेत्रीय निदेशक रांची डॉ. अजय कुमार मिश्रा, राकेश पांडे समेत कई दर्शक मौजूद रहे।

बच्चों ने असम की सत्रिया परंपरा माटी-अखोरा प्रस्तुत किया। जो भगवान कृष्ण की किवदंतियों और पौराणिक कथाओं के इर्द-गिर्द घूमता है। नृत्य में बच्चों के एक्रोबेटिक पॉश्चर और उनकी फ्लेक्सिब्लिटी देखते बन रही थी। माटी-अखोरा बुनियादी व्यायाम करने की कला हैं जो विभिन्न नृत्य कलाओं के साथ संयुक्त है। असम में यह शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य की नींव मानी जाती है। जो नर्तक बनने के लिए आवश्यक है। फिर भगवान कृष्ण को मोहित करने के लिए कलाकारों ने साली डांस प्रस्तुत किया। साली डांस सत्रिया का शुद्ध रूप है। जिसे फसलों की कटाई के समय में किया जाता है। बांसुरी और हारमोनियम जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों ने पूरे सभागार को झंकृत कर दिया।

कलाकारों ने उत्तर-पूर्व के पारंपरिक नृत्य के जरिए स्वस्थ शरीर व मन का भी संदेश दिया।

लुभा गई पूर्वोत्तर की समृद्ध संस्कृति

तीन दिनी पूर्वोत्तर सांस्कृतिक महोत्सव का समापन, उत्तर-पूर्व के कलाकारों की प्रतिभा ने किया प्रभावित

जागरण संवाददाता, रांची : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय शाखा की ओर से तीन दिनों तक चलने वाले पूर्वोत्तर सांस्कृतिक महोत्सव का समापन शनिवार को हो गया। असम और मणिपुर के बीस कलाकारों ने तीन दिनों तक अपनी परंपरा का प्रदर्शन किया। आर्यभट्ट सभागार कार्यक्रम का साक्षी रहा।

अंतिम दिन असम की सत्रिया परंपरा माटी अखोरा का मंचन किया गया। कहा जाता है कि 15 वीं सदी में वैष्णव भक्ति आंदोलन के हिस्से के रूप में सत्रीय परंपरा बढ़ी, जो संत और सुधारवादी श्रीमंत शंकरदेव ने असम में वैष्णववाद की शुरुआत की। यह वर्षों से नृत्य के रूप में विकसित हुई-नाटक भगवान कृष्ण की किंवदंतियों और पौराणिक कथाओं के चारों ओर घूमता है। यह नृत्य विशेष रूप से भागवत पुराण जैसे पाठ पर ध्यान केंद्रित करता है।

आर्यभट्ट सभागार में कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए कलाकार ● जागरण

सत्रिय नृत्य की एक विशिष्ट विशेषता : सत्रिय नृत्य की एक विशिष्ट विशेषता है कि वह पूर्वी क्षेत्र में भागवत पुराण के सामने की जाती है, जो कि नामघर के पूजा स्थल या मंदिर के मणिकुट से मिलती है। कई अन्य शास्त्रीय नृत्य रूपों की तरह, सत्रिया खुद का एक संरचनात्मक व्याकरण है जिसे माटी-अखोरा कहा जाता है, जो सत्रिया नृत्य की नींव है। माटी- अखोरा बुनियादी व्यायाम करने की कला है, जो विभिन्न नृत्य संख्याओं के साथ संयुक्त विभिन्न नृत्य संख्याओं के लिए एक आयाम हैं। माटी- अखोरा का अर्थ है जमीन पर किया गया व्यायाम, और इसके पूरा होने के बाद एक नर्तक को व्यक्तिगत नृत्य संख्या सिखाई जा सकती है। माटी-अखोरा एक स्वस्थ शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक समुच्चय की नींव है जो नर्तक बनने के लिए आवश्यक है। ये अभ्यास यौगिक मुद्राओं के समान हैं जो नर्तकियों को शारीरिक और मानसिक अनुशासन बनाए रखने में मदद करता हैं।

दो भागों बंटा है वह नृत्य : असम में लगभग 64 माटी अखोरा हैं और मोटे तौर पर दो भागों में वर्गीकृत हैं-शुद्ध व्यायाम और बुनियादी नृत्य इकाइयां। शुद्ध अभ्यास एक्रोबेटिक पोज पर आधारित होते हैं, ो आमतौर पर किसी भी नृत्य के दौरान उपयोग नहीं किए जाते हैं। माटी अखोरा के अंतर्गत शरीर की बुनियादी स्थितियों, शरीर के झुकने, शरीर की गतिविधियों से लेकर पैरों की गति, कूद, करवट, चाल और गर्दन की गति आदि का इस्तेमाल होता है।

बारपेटा का भोरताल नृत्य भी खास : अगली प्रस्तुति असम में सबसे उत्साही नृत्य रूपों में गिनी जाती है, जिसे बारपेटा का भोरताल नृत्य कहते हैं। यह नृत्य नरहरि बुरहा बबकत नाम के सतरिया कलाकार की गौरवपूर्ण खोज है। और इसी से नृत्य को नाम मिला। असमिया परंपराओं के तेजतर्रार कला रूप काफी शानदार थे और दर्शकों ने कलाकारों को तालियों के साथ कार्यक्रम का खूब आनंद उठाया। इस मौके पर डॉ. ऋचा नेगी, क्षेत्रीय निदेशक, उत्तर पूर्व क्षेत्रीय केंद्र और डॉ. अजय कुमार मिश्रा आदि थे।

माटी अखोरा और साली डांस में दिखाई गई असम की संस्कृति

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय शाखा और उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शाखा की ओर से मोरहाबादी के आर्यभट्ट सभागार में आयोजित तीन दिवसीय उत्तर-पूर्व भारत का सांस्कृतिक चित्रण आउटरिच कार्यक्रम शनिवार को संपन्न हुआ। कार्यक्रम में असम और मणिपुर के 20 कलाकारों ने उत्तर पूर्व भारत की समृद्ध परंपरा को मंच पर प्रदर्शित किया।

आखिरी दिन असम की सत्रीय परंपरा माटी अखोरा का मंचन हुआ। माटी अखोरा का अर्थ जमीन पर किया गया व्यायाम है। एक नर्तक को व्यक्तिगत नृत्य संख्या सिखाई जा सकती है। माटी अखोरा एक स्वस्थ शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक समुच्चय की नींव है, जो नर्तक के लिए आवश्यक है। यह योगिक मुद्राओं के समान हैं। लगभग 64 माटी अखोरा हैं।

कलाकारों ने बताया कि 15वीं सदी में वैष्णव भक्ति आंदोलन के हिस्से के रूप में सत्रीय परंपरा बढ़ी, जो संत और सुधारवादी श्रीमंत शंकरदेव ने असम में वैष्णववाद की शुरुआत की। यह वर्षों से नृत्य के रूप में विकसित हुआ। नाटक भगवान कृष्ण और पौराणिक कथाओं के चारों ओर घूमता दिखा।

OUTREACH–PORTRAYING THE CULTURE OF NE ENDS

Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), Regional Centre Ranchi, Ranchi University in collaboration with North East (NE) Regional Centre, Guwahati organised a three days' programme showcasing the rich tradition of North East India. Twenty-Two artists from Assam and Manipur staged the vibrant performances. 'MaatiAkhora' of Sattriya tradition of Assam was staged on the concluding day. Dr. Richa Negi, Regional Director, North East Regional Centre and Dr. Ajay Kumar Mishra, Regional Director, Regional Centre Ranchi graced the concluding ceremony of the outreach programme.

आर्यभट्ट सभागार में आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रम संपन्न

असम व मणिपुर के कलाकारों ने किया उत्तर-पूर्व की संस्कृति का जीवंत प्रदर्शन

संवाददाता ▷ रांची

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की रांची व गुवाहाटी क्षेत्रीय शाखा द्वारा रांची विवि के सहयोग से आर्यभट्ट सभागार, मोरहाबादी में आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रम के समापन दिवस पर असम व मणिपुर के कलाकारों ने उत्तर पूर्व की संस्कृति का जीवंत प्रदर्शन किया. इस अवसर पर असम की सत्रिय परंपरा के तहत माटी अखोरा का मंचन किया गया. इसके बाद सत्रिय नृत्य के विशुद्ध रूप साली व असमिया बारपेटा का भोरताल नृत्य प्रस्तुत किया गया. दर्शकों ने इसका खूब आनंद उठाया. मंच का संचालन केंद्र के कार्यक्रम पदाधिकारी राकेश पांडेय ने किया. इस अवसर पर आइजीएनसीए की उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय निदेशक डॉ ऋचा नेगी व रांची क्षेत्रीय केंद्र के निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा मौजूद थे.

कार्यक्रम पदाधिकारी राकेश पांडेय ने बताया कि सत्रिय परंपरा 15वीं सदी में वैष्णव भक्ति आंदोलन के हिस्से के रूप में विकसित हुई, जिसे संत व सुधारवादी श्रीमंत शंकरदेव ने असम में वैष्णववाद की शुरुआत के साथ आगे बढ़ाया था. वर्षों से यह भगवान कृष्ण की किंवदंतियों व पौराणिक कथाओं के ईद-गिर्द घूमते नृत्य-नाटक के रूप में विकसित हुआ है. साली नृत्य सत्रिय नृत्य का विशुद्ध रूप है. वहीं, बारपेटा का भोरताल नृत्य को असम में सबसे ऊर्जावान नृत्य के रूप में देखा जाता है. यह नृत्य नरहरि बुरहा भक्त नाम के सतरिया कलाकार की गौरवपूर्ण खोज है.

Folk dances of Assam liven up varsity

ACHINTYA GANGULY

Artistes from Assam perform Bhortal, a folk dance, at Aryabhatta Auditorium in Morabadi, Ranchi, on Saturday. (Prashant Mitra)

Ranchi: Students of Ranchi University got a rare opportunity to witness exquisite dance forms of north-eastern states of Assam and Manipur during a three day programme titled 'Outreach: Portraying Culture of North East,' which concluded at Aryabhatta Auditorium on their campus on Saturday.

Organised by the Ranchi regional centre of Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA) in association with IGNCA Northeast regional centre, Guwahati, as many as 22 artistes took part in the event.

On the first day an Odissi dance was performed by Sumedha Sengupta followed by Gayan Bayan — a form of Sattriya dance of Assam.

Basant Raas, a form of Raas Leela from Manipur, was showcased on Friday.

Raas Leela or dance depicting divine love between Lord Krishna and Radha is believed to be a two centuries' old tradition that was introduced in 1779 during the rule of Ningthon Ching-Thang Khomba, also known as Rajarshi Bhagya Chandra, the 18th century Meitei monarch.

There are five different styles of Manipuri Raas Leela — Basant Raas, Maha Raas, Nitya Raas, Kunja Raas and Diba Raas. Among them Basant Raas is performed during the spring (March-April).

"I had heard about rich Manipuri dance forms and finally got an opportunity to witness it. It was simply a visual treat," said Rashmi Kumari, a Ranchi University student.

A musical *jugalbandi* of *bansi* (flute), *khol* (drum) and *jhaal* (big cymbal) of the Sattriya tradition of Assam was also performed on the second day.

On the concluding day, artistes from Assam staged three different forms of Sattriya dance.

One of them was Mati-Akhora, a form that evolved as a part of Vaishnav Bhakti movement, introduced by reformer-saint Shrimat Sankardev, which generally revolves around legends and mythological tales of Lord Krishna as depicted in the Bhagwat Puran.

This was followed by Sali Nritya, another form of Sattriya dance. Another troupe presented *rajghariya* (royal) sali dance.

A group of seven dancers staged Bhortal Nritya during which they showcased excellent acrobatic skills with *jhaal* musical instrument.